Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

सम्राट अशोक के शासन में नैतिकता : एक शोधात्मक विश्लेषण

डॉ.रवीन्द्र कुमार वर्मा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर,अम्बेडकरनगर।
Email: ravigdc81@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170805
ISSN: 2230-9578

Volume 17
Issue 8(B)|
Pp. 35-40
Aug 2025

Submitted:10 July. 2025
Revised: 25 July. 2025
Accepted: 10 Aug. 2025
Published: 31 Aug. 2025

शोध सारांश

अशोक महान ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान भारत में सामाजिक,आर्थिक,प्रशासनिक नीति के माध्यम से एक समावेशी एवं कल्याणकारी राज्य स्थापित करके मौर्य साम्राज्य पर शासन किया था। सम्राट् अशोक का शासन भारतीय इतिहास में नैतिकता और धर्मनिरपेक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। कलिंग युद्ध की भीषणता ने उन्हें अहिंसा, करुणा और धार्मिक सहिष्णुता की ओर प्रवृत्त किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने 'धम्म' की नीति अपनाई। अशोक बौद्ध धर्म अपनाने के बाद एक क्रूर विजेता से एक उदार और दयालु शासक में परिवर्तन के लिए प्रसिद्ध हैं।प्राचीन शिलालेख भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत में अमूल्य स्थान रखते हैं। पत्थर, धातु और अन्य सामग्रियों पर उकेरे गए ये शिलालेख एक टाइम कैप्सूल के रूप में काम करते हैं, जो बीते युगों की कहानियों, भाषाओं और घटनाओं को संरक्षित करते हैं। इन शिलालेखों का समग्र विश्लेषण भारत के विविध अतीत में एक खिड़की प्रदान करता है, जो इसकी भाषाओं, धर्मों, सामाजिक संरचनाओं, राजनीतिक प्रणालियों और इसकी लिखित लिपि के विकास में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। हम भारत के प्राचीन शिलालेखों के महत्व, विविधता, व्याख्या, ऐतिहासिक संदर्भ और स्थायी विरासत पर गौर करेंगे। उनके शासनकाल के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक चट्टानों और स्तंभों पर खुदे हुए शिलालेखों की एक श्रृंखला जारी करना है, जो प्राचीन भारत के शासन, नैतिक मूल्यों और धार्मिक दर्शन में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इस व्यापक अन्वेषण में, हम अशोक के प्रमुख शिलालेखों, उनके ऐतिहासिक महत्व, नैतिक सिद्धांतों और भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य पर स्थायी प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

बीजशब्द–*ऐतिहासिक, प्रशासनिक, शिलालेख, प्रासंगिकता, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, नैतिक आचरण सद्भावना, धम्म–नीति, सर्वधर्मसम्भाव, अनुसावन ।*

धर्म समाज के नैतिक आधार के निर्माण के लिए आवश्यक है। सम्राट अशोक के शिलालेखों एवं स्तम्भलेखों से सदाचार एवं धर्म सम्बन्धी बातों का परिज्ञान होता है। अशोक ने अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए जिन आचरणों की सहिता प्रस्तुत की है उन्हें उसके अभिलेखों में धम्म की संज्ञा दी गई है। अशोक की धम्म नीति विश्व जनीन थीं। इसमें सकारात्मक सहिष्णुता, सभी सामाजिक प्रतिनिधियों के प्रति समानता का सम्मान, सांस्कृतिक कूटनीति, राज्यों की नैतिकता व सद्भावनापूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय रिश्ते बहस एवं बातचीत को संचालित करने के रास्ते, सभी सम्प्रदायों के सदभावनापूर्ण व्यवहार, न्यायिक व प्रशासनिक स्वायत्तता, सामाजिक कार्य एवं सेवाओं का केन्द्रीकरण, शांति के प्रचार, दान एवं दक्षिणा व सभी जरूरतमंदों को शामिल किया है।

अशोक की धम्म नीति शासक एवं शासित दोनों की जिम्मेदारियों को तय करती है। रोमिला थापर के अनुसार 'अशोक ने धम्म नीति' को सामाजिक उत्तरदायित्व की एक वृत्ति के रूप में देखा था। इसमें मानव की महिमा को स्वीकृति देने तथा समाज के कार्यकलापों में मानवीय भावना का संचार करने का आग्रह था। सम्राट अशोक ने द्वितीय स्तम्भ लेख में धम्म के बारे में विस्तृत रूप से बताया है तदानुसार धम्म साधु (श्रेष्ठ) है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI:10.5281/zenodo.17164964
OPEN ACCESS

Address for correspondence:
डॉ.रवीन्द्र कुमार वर्मा, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर,अम्बेडकरनगर।

How to cite this article:
वर्मा,. रवीन्द्र. कुमार. (2025). सम्राट अशोक के शासन में नैतिकता: एक शोधात्मक विश्लेषण. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 35–40. https://doi.org/10.5281/zenodo.17164964

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

इसमें उन्होंने अल्पपाप, बहुकल्याण, दया–दान, सत्यवादिता, पवित्रता जैसे सद् आचरण एवं नैतिक आदशों की गणना की है जो धम्म निर्माण में सहायक हैं। धम्म व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, शौच, दान, अस्तेय अपरिग्रह आदि गुणों का समावेश करता है। अशोक अपने प्रथम शिलालेख में पशुबलि की निंदा करते हैं। इस अभिलेख में अशोक ने जानवरों की बलि को पाप करार दिया है। सभी का जीवन समान रूप से कीमती है, ऐसा उनका मानना था। द्वितीय शिलालेखों में उन्होंने हमें मनुष्यों और पशुओं के साथ समान व्यवहार पर जोर देने की बात कही और औषधीय जड़ी बूटियों, जड़ों एवं फलों आदि की उन स्थानों पर रोपाई होनी चाहिए, जहाँ अभी तक वे नहीं थे। अशोक के तीसरे शिलालेख के अनुसार ज्ञात होता है कि उसके राज्य में प्रादेशिक, राजुक, युक्तों को हर पाँचवें वर्ष धर्म प्रचार हेतु भेजा जाता था, जिसे अनुसावन कहा जाता है। पॉचवे शिलालेख में धर्म महामंत्रों की नियुक्ति करता है। अशोक का छठा शिलालेख सिविल सेवकों की वर्तमान फसल के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रकाश स्तम्भ है, जिसमें उन्होंने आत्मनियन्त्रण की शिक्षा दी हैं। अशोक अपने अधिकारियों को जनता से हर समय और हर दिन सम्पर्क करने के लिए कहते हैं। शायद इसकी पृष्ठभूमि में सार्वजनिक हित प्रमुख कारण रहा हो। अशोक ने अपने अन्य शिलालेखों में सच्ची भेंट व सच्चे शिष्टाचार का वर्णन किया है। अपने दसवें शिलालेख में राजा व उच्च अधिकारियों को सदैव राजा का हित सोचने की सलाह दी है। अशोक ने अपने शिलालेखों में साम्प्रदायिक सौहार्द का सन्देश दिया है। बारहवीं शिलालेख में विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान मनुष्य को दूसरे के धर्म की अकारण निंदा नहीं करनी चाहिए। जो अपने सम्प्रदाय के प्रति भक्ति और उन्नति की लालसा से दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा करता है वह वस्तुतः अपने की समप्रदाय की हानि करता है। सभी एक–दूसरे के धम्म को सुनें इससे सभी सम्प्रदाय बहुश्रुत होंगे तथा संसार का कल्याण होगा। अशोक का सर्वधर्मसम्भाव का दृष्टिकोण उन्हें एक उच्च एवं सफल धार्मिक अन्वेषक के रूप में प्रतिष्ठापित करता है। अशोक ने अपने लेखों में धार्मिक सहिष्णुता सर्वधर्मसम्भाव तथा विश्व बन्धुत्व का संदेश दिया है। शांति एवं सौहार्द के लिए सभी धर्मों का समन्वय अपेक्षित है। धर्म की रक्षा सदैव सदाचार से ही होती है। धम्म और उसके उपादान अशोक को बहुत प्रिय थे। धम्म के प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने धम्म महामात्यों की नियुक्ति की। अशोक धम्म की विपुल प्रशंसा करता है। वह धम्म में विश्वास एवं श्रद्धा को परिभाषित करता है।

अशोक धौली और जौगढ़ के प्रथम पृथक अभिलेख में कहता है कि सभी मानव हमारी सन्तानें हैं। निश्चित रूप से अशोक की धम्म नीति में कोई लिंगभेद नहीं है। उन्होंने इसके जरिये बिना भेदभाव के सभी के लिए खुशी और उनके कल्याण की कामना की है। द्वितीय पृथक अभिलेख में सम्राट अशोक ने अपने पड़ोसियों को भरोसा दिलाया है। यह अभिलेख वर्तमान विदेश नीति विश्लेषकों और राजनायिकों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है। निश्चित रूप से उन्होंने पड़ोसी अविजित प्रदेशों को आश्वस्त करने के लिए राजा के पास अपने लोगों की रक्षा के लिए एक विशाल सेना खड़ी की। हालांकि विधि के माध्यम से धम्म की नीति के दूर–दूर तक प्रसार के पीछे अशोक की विशाल सेना नहीं थी, बल्कि खुद उनका नेतृत्व दृष्टि, दृढ़ विश्वास, सहयोग शान्ति अनुनय सद्भाव, आपसी लाभ, विश्वास और सच्चाई का मार्ग था।

सम्राट अशोक के प्रमुख शिलालेख, चट्टानों और स्तंभों पर खुदे हुए, एक विजेता से दयालु और नैतिक रूप से प्रेरित शासक में उनके परिवर्तन के लिए एक उल्लेखनीय प्रमाण के रूप में काम करते हैं। धम्म, धार्मिक सहिष्णुता, अहिंसा और सामाजिक कल्याण के सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी। अशोक की विरासत उनके शिलालेखों के स्थायी प्रभाव के माध्यम से कायम है, जो समकालीन चर्चाओं को प्रेरित करती रहती है। नैतिकता, शासन और एक न्यायपूर्ण और दयालु समाज की खोज पर। जैसे ही हम इन प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन करते हैं, हमें एक सम्राट के नैतिक शासन और प्रबुद्ध नेतृत्व के बारे में गहन जानकारी प्राप्त होती है, जो अपने विशाल साम्राज्य में सभी प्राणियों के लिए शांति और कल्याण को बढ़ावा देना चाहता था।

धम्म की नीति

अशोक ने 'धम्म' के माध्यम से समाज में नैतिकता और करुणा को बढ़ावा दिया। यह नीति अहिंसा, सत्य, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक कल्याण पर आधारित थी। उन्होंने अपने शिलालेखों में इन सिद्धांतों का प्रचार किया, जिससे प्रजा में नैतिक आचार संहिता का पालन सुनिश्चित हुआ।

धम्म महामात्र

धम्म की नीति के प्रचार–प्रसार के लिए अशोक ने 'धम्म महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इनका कार्य प्रजा को नैतिक शिक्षा देना, धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना और समाज में शांति स्थापित करना था। वे विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को धम्म की शिक्षाएं देते थे और समाज में शांति और सुसंगठितता का माहौल बनाए रखते थे।

धार्मिक सहिष्णुता

अशोक ने सभी धर्मों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। उन्होंने अपने शासनकाल में किसी भी धार्मिक समुदाय के प्रति भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। अशोक ने शिलालेखों में लिखा कि "धर्म का पालन करना सभी के लिए लाभकारी है, क्योंकि यह सभी धर्मों के प्रति सम्मान और समझ को बढ़ावा देता है।"

धम्म की अवधारणा

अशोक का धम्म जीवन जीने की एक नैतिक संहिता थी, जो अहिंसा, सत्य, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित थी। उन्होंने अपने शिलालेखों के माध्यम से इन सिद्धांतों का प्रचार किया, जिसमें माता–पिता, गुरु, और वृद्धजनों का सम्मान, दासों और सेवकों के प्रति दया, और सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा का संदेश शामिल था। मानव समाज एवं व्यक्ति के समग्र विकास में नैतिकता की महती भूमिका रही है। नैतिकता व्यक्ति को सत्य कार्यों के माध्यम से उन्नति की ओर अग्रसर करती है। भारतीय प्रज्ञा ने धर्म में नैतिकता एवं कर्तव्यपरायणता को महत्वपूर्ण स्थान देकर व्यक्ति के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नयन का मार्ग प्रशस्त किया है। प्राचीन भारत में नैतिकता की ऋग्वेद, अथर्ववेद, महाभारत, भगवद् पुराण और ब्रह्मपुराण में विस्तार से व्याख्या की गई है। वैदिक ग्रन्थों में नैतिक कर्त्तव्य के आधार पर ही अधिकार को सुरक्षित करने का कार्य किया गया है। अतः नैतिक आचरण से ही मानव अधिकारों का विकास हुआ है। सम्राट् अशोक भारतीय इतिहास में अपनी नैतिक और धर्मनिरपेक्ष नीतियों के लिए प्रसिद्ध हैं। कलिंग युद्ध की भीषणता ने उनके हृदय में गहरा परिवर्तन लाया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने 'धम्म' की नीति अपनाई। यह नीति किसी विशेष धर्म का प्रचार नहीं थी, बल्कि एक नैतिक आचार संहिता थी, जिसका उद्देश्य समाज में नैतिकता, करुणा, और सहिष्णुता को बढ़ावा देना था। अशोक का धम्म जीवन जीने की एक नैतिक संहिता थी, जो अहिंसा, सत्य, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित थी। उन्होंने अपने शिलालेखों के माध्यम से इन सिद्धांतों का प्रचार किया, जिसमें माता–पिता, गुरु, और वृद्धजनों का सम्मान, दासों और सेवकों के प्रति दया, और सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा का संदेश शामिल था।

अशोक के प्रशासन का भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है जिसकी नैतिकता और धार्मिकता ने उसे एक अद्वितीय स्थान प्रदानृ किया। अशोक का प्रशासन नैतिक मूल्यों पर आधारित था और उन्होंने न्याय, समरसता, और सहिष्णुता को प्रमुख धार्मिक और राजनीतिक मूल्य माना। अशोक के प्रशासन का एक प्रमुख विशेषता उनका धर्मनिरपेक्ष पहलू था। उन्होंने सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण बनाया और सभी सम्प्रदायों को समरसता से सम्मानित किया। उनका यह पहल सामाजिक और धार्मिक एकता को प्रोत्साहित किया और राज्य को एकत्रित किया। नैतिकता व्यक्ति या समाज के व्यवहार को संचालित करने वाला नैतिक सिद्धान्तों का पुलिन्दा है। नैतिकता का अर्थ है कि एक पैटर्न या एक आचरण का तौर–तरीका जो लोगों के समूह द्वारा स्वीकार्य हो। मानव जाति का अंतिम लक्ष्य समाज में उसके व्यवहार से सम्बन्धित होता है जिसे नैतिकता कहते हैं। नैतिकता लोगों के जीवन में सर्वश्रेष्ठ मार्ग की खोज करती है और किसी विशेष परिस्थिति में अच्छे बुरे की पहचान करती है। नैतिकता अच्छा–बुरा, सही–गलत, और न्याय–अपराध आदि के सवालों को हल करती है। स्वाभाविक है कि मानव व्यवहार एवं उसके विभिन्न आयामों के सिद्धान्तों को नैतिकता हल करती है। अतः नैतिकता की अवधारणा धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से तय होती है। मौर्य सम्राट अशोक एक गैर परम्परागत धर्म की नीति पर चले जिसमें इस तरह के तत्व उसके केन्द्र बिन्दु थे। नैतिकता का तात्पर्य सभी परिस्थितियों में साफ–सुथरे व्यवहार से है। यदि सिद्धान्त व्यावहारिक रूप से उपयोग होते हैं तो उन्हें मानव व्यवहारों से प्रभावित करने की आवश्यकता पर रहा। उसी प्रकार से नौर्य शासक अशोक का पूरा जोर उसके व्यवहार को प्रभावित करने की आवश्यकता है। अशोक के पंचम प्रमुख चट्टान लेख के अनुसार अच्छा करना कठिन है और जो अच्छा करता है, एक कठिन कार्य करता है । अशोक ने नैतिक आचरण पर जोर दिया है। नैतिकता एक नैतिक कपास मुहैया कराती है। नैतिकता हमेशा दूसरों के हित के लिए होती है। यह शासक का कर्तव्य है कि वह लोगों के मस्तिष्क को नैतिकता के आधार पर तैयार करे, वह समाज में नैतिक परिवेश तैयार करे। मानवता व मैत्रीपूर्ण व्यबहार शान्ति एवं सद्भाव बरकरार रखने के अलावा अपराध पर नियन्त्रण और न्याय प्रदान करने के लिए नैतिकता आवश्यक होती है। नैतिक नीति स्थापित करने के लिए अशोक ने जिन अन्य परिवर्तनों का आदेश दिया, उनमें शाही क्षेत्र के चारों ओर बरगद और आम के पेड़ लगाने का आदेश देना शामिल था, विश्राम गृहों का निर्माण करना, सड़कों के किनारे हर आधे मील पर कुएँ बनाए जाएँ ताकि मनुष्यों और जानवरों को जल की सुविधा मिल सके, मनुष्यों और जानवरों के लिए चिकित्सा सुविधाओं का निर्माण, लोग अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करें, पुजारियों और तपस्वियों के प्रति उदार हों और अपने खर्च में मितव्ययिता बरतें। कुल मिलाकर जरूरतृमंदों को आवश्यक सेवाएं प्रदान करने के लिए जनशक्ति दोगुनी कर दी गई, और प्रमुख आंतरिक राजनीतिक सुधार तब हुआ, जब अशोक ने गरीबों और वृद्धों के कल्याण और खुशी के लिए काम करने के लिए अधिकारियों को कमीशन देकर नैतिक और राजनीतिक कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी।

अशोक द्वारा दिया गया एक और विवादास्पद आदेश यह था कि लोगों को सभी धर्मों के लोगों का सम्मान करना चाहिए। इस संदेश को संभवतः ब्राह्मणवादी पुजारियों और धार्मिक पंडितों के लिए एक खतरे के रूप में माना गया था, जो मानते थे कि केवल उन्हें ही यह तय करने का अधिकार है कि लोगों को किन धार्मिक नियमों का पालन करना चाहिए। अशोक के प्रति ब्राह्मणवादी शत्रुता ऐतिहासिक चुप्पी के रूप में सामने आई। जैसा कि एलन (2012) कहते हैं, सम्राट अशोक को "भारत के इतिहास से पूरी तरह मिटा दिया गया था... पूरे देश में बौद्ध धर्म को बढ़ावा देकर, अशोक ने सीधे तौर पर ब्राह्मण व्यवस्था के जाति–आधारित अधिकार को चुनौती दी थी।'दरअसल, मौर्योत्तर काल तक अन्य धर्मों के प्रति ब्राह्मणवादी असहिष्णुता इतनी प्रचलित थी कि पतंजलि के महाभाष्य में कहा गया है कि ब्राह्मण और श्रमण (जिनमें जैन, बौद्ध और अन्य शामिल हैं) सांप और नेवले की तरह 'सनातन' दुश्मन हैं" (झा, 2016, पृष्ठ 5)‌. ब्राह्मणवादी विरोध के झटके के बावजूद, अशोक ने सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए मौर्य की बड़ी और शक्तिशाली सेना रखी और बौद्ध मिशनरी अभियानों के माध्यम से एशिया और यूरोप भर के राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों का विस्तार किया। पूरे साम्राज्य में स्तूप, बौद्ध धार्मिक संरचनाओं का निर्माण करने

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

के साथ–साथ, अशोक ने 'आध्यात्मिक साम्राज्यवाद' या आधुनिक समय की नरम शक्ति के अपने संस्करण को बढ़ावा देने के लिए दूरदराज के देशों में नैतिक मंत्रियों को नियुक्त किया।

अशोक के धम्म का यदि सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने साधारण प्रजा के लिए जिस धर्म का विधान किया वह वस्तुतः सभी धर्मों का सार तथा नैतिकता से परिपूर्ण था। आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व एक भारतीय सम्राट मानवता की भलाई के प्रति चिंतनशील दिखाई पड़ता है। उस समय वहाँ प्रशासन की उदासीनता की जांच के लिए कोई स्वतंत्र प्रेस, कोई विपक्ष या आन्दोलन नहीं था। डा0 राधाकुमुद मुखर्जी के शब्दों में अशोक इतिहास में शांति एवं विश्व बन्धुत्व के अन्वेषकों में सर्वप्रथम है। इस दृष्टि से वह न केवल अपने समय से अपितु आधुनिक समय से भी बहुत आगे था जो अब भी इस आदर्श को कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। भारत के किसी भी सम्राट ने इतनी विश्वव्यापी प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त की तथा किसी ने भी धार्मिकता एवं सदाचार के प्रति अपने उत्साह के कारण विश्वपटल पर इतना अधिक प्रभाव उत्पन्न नहीं किया।

अशोक ने धम्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, जिनका कार्य प्रजा को नैतिक शिक्षा देना, धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना, और समाज में शांति स्थापित करना था। उन्होंने न्यायिक प्रणाली में सुधार करते हुए मृत्युदंड प्राप्त अपराधियों को तीन दिन का समय दिया, ताकि वे प्रायश्चित कर सकें और अगले जीवन के लिए तैयारी कर सकें। इसके अतिरिक्त, अशोक ने सभी धर्मों के प्रति समान आदर का संदेश दिया और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। अशोक का प्रशासन नैतिकता के मामले में महत्वपूर्ण था। वह अपने अधिकारियों को न्याय के प्रति सजग रहने की समझाते थे और समाज में न्याय को सुनिश्चित करने के लिए कठोर कार्रवाई किया। उन्होंने विविध धर्मों और सम्प्रदायों के प्रति समझदारी और सहिष्णुता दिखाई। उनके शांतिपूर्ण तंत्र की वजह से वे इतिहास में 'अशोक धर्म' के नाम से मशहूर हैं। अशोक के प्रशासन में नैतिकता का उच्च स्तर उनके समाज में सुधार के प्रमुख कारण बना। उन्होंने विविध धर्मों और सम्प्रदायों के साथ सहयोग किया, धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहित किया, और धर्मविश्वासों के बीच संवाद को बढ़ावा दिया। उनके धर्म के सिलसिले में कई स्तूप और शिलालेख बनाए गए, जो आज भी उनके समृद्ध नैतिकता और धार्मिक समझ का प्रमाण हैं। उनका प्रशासन न्यायपूर्ण, समाज केन्द्रित, और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। अशोक के धर्म के सिलसिले में कई स्तूप और शिलालेख बनाए गए, जो उनके नैतिक मूल्यों को उजागर करते हैं। उन्होंने धर्म के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया, जिनमें नैतिक जीवन, अहिंसा, समरसता, और संघर्ष से संबंधित महत्वपूर्ण तत्व शामिल थे।

न्याय, प्रशासन और सामाजिक सुधार

अशोक के प्रशासन में न्यायपूर्णता भी महत्वपूर्ण थी। उन्होंने अपने अधिकारियों को न्याय के प्रति सजग रहने की समझाई और न्याय के लिए कठोर कार्रवाई की। उनका प्रशासन समाज केन्द्रित था, जिसमें न्यायपूर्णता का विशेष महत्व था। समाज में न्याय और नैतिकता को बढ़ावा देने के साथ–साथ, अशोक का प्रशासन उत्तरदायित्वपूर्ण भी था। वे अपने राज्य के लोगों के भलाई के लिए कई सामाजिक कार्यक्रमों को संचालित किया और समर्थ शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को प्रवाहित किया।

न्याय और प्रशासन

अशोक के प्रशासन में न्यायपूर्णता और समानता का विशेष महत्व था। उन्होंने अपने अधिकारियों को न्याय के प्रति सजग रहने की समझाई और न्याय के लिए कठोर कार्रवाई की। उनके शासन में दंड–समता और व्यवहार–समता स्थापित की गई, जिससे प्रजा में विश्वास और संतुष्टि बनी रही।

सामाजिक सुधार

अशोक ने समाज में नैतिकता और करुणा को बढ़ावा देने के लिए कई सामाजिक सुधार किए। उन्होंने चिकित्सा सुविधाओं, जल प्रबंधन, और सार्वजनिक सुविधाओं के निर्माण पर जोर दिया। अशोक ने वृक्षारोपण और पानी के स्रोतों के संरक्षण के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की। अशोक का प्रशासन नैतिकता, न्याय और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित था, जिसने भारतीय समाज में स्थायी प्रभाव छोड़ा। उनकी नीतियां आज भी शासन और प्रशासन के क्षेत्र में प्रेरणास्त्रोत मानी जाती हैं।
सम्राट अशोक का शासनकाल भारतीय इतिहास में नैतिकता, अहिंसा, और धार्मिक सहिष्णुता के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कलिंग युद्ध की भीषणता ने अशोक के हृदय में गहरा परिवर्तन लाया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने श्धम्मश की नीति अपनाई। यह नीति किसी विशेष धर्म का प्रचार नहीं थी, बल्कि एक नैतिक आचार संहिता थी, जिसका उद्देश्य समाज में नैतिकता, करुणा, और सहिष्णुता को बढ़ावा देना था। अशोक के प्रशासन में न्याय और समानता का विशेष महत्व था। उन्होंने अपने अधिकारियों को न्याय के प्रति सजग रहने की सलाह दी और प्रजा के कल्याण के लिए कठोर निर्णय लेने से नहीं हिचकिचाए। उनके शासन में दंड–समता और व्यवहार–समता स्थापित की गई, जिससे प्रजा में विश्वास और संतुष्टि बनी रही। अशोक ने समाज में नैतिकता और करुणा को बढ़ावा देने के लिए कई सामाजिक सुधार किए। उन्होंने चिकित्सा सुविधाओं, जल प्रबंधन, और सार्वजनिक सुविधाओं के निर्माण पर जोर दिया। सड़कों के किनारे वृक्षारोपण, यात्रियों के लिए अतिथि गृहों का निर्माण, और कई स्थलों पर प्याऊ का निर्माण उनके सामाजिक कल्याण के प्रयासों का हिस्सा थे। अशोक का प्रशासन नैतिकता, न्याय, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित था, जिसने भारतीय समाज में स्थायी प्रभाव छोड़ा। उनकी नीतियां आज भी शासन और प्रशासन के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत मानी जाती हैं। सम्राट् अशोक ने अपने शासनकाल में अनेक लोक कल्याणकारी कार्यों

का संचालन किया, जो उनकी प्रजावत्सलता और धर्मपरायणता को दर्शाते हैं। इन कार्यों का उद्देश्य प्रजा के जीवन स्तर में सुधार लाना और समाज में नैतिकता एवं सद्भावना को बढ़ावा देना था।

1. चिकित्सा सुविधाओं की स्थापना–

अशोक ने मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालयों की स्थापना की। जहां आवश्यक औषधियाँ उपलब्ध नहीं थीं, वहां उन्होंने बाहर से औषधीय पौधों को मंगवाकर लगवाया, जिससे सभी को उचित चिकित्सा सुविधा मिल सके।

2. पर्यावरण संरक्षण और जल प्रबंधन–

उन्होंने सड़कों के किनारे बरगद और आम के वृक्ष लगवाए, जिससे यात्रियों और पशुओं को छाया मिल सके। प्रत्येक आधे कोस (लगभग 1.5 मील) की दूरी पर कुएं खुदवाए और विश्रामगृहों का निर्माण कराया, ताकि यात्रियों को जल और विश्राम की सुविधा मिल सके।

3. पशु संरक्षण–

अशोक ने पशु–पक्षियों की हत्या पर प्रतिबंध लगाया। उन्होंने राजकीय रसोई में भी दो मयूरों और एक हिरण के अलावा अन्य किसी पशु की हत्या पर रोक लगाई। इसके अतिरिक्त, कुछ विशेष दिनों में पशुओं के वध, शिकार और वंध्याकरण पर भी प्रतिबंध लगाया गया।

4. न्यायिक सुधार–

अशोक ने न्यायिक प्रणाली में सुधार करते हुए मृत्युदंड प्राप्त अपराधियों को तीन दिन का समय दिया, ताकि वे प्रायश्चित कर सकें और अगले जीवन के लिए तैयारी कर सकें। उन्होंने न्यायाधिकारियों को निष्पक्ष और समान न्याय प्रदान करने के निर्देश दिए।

5. सामाजिक सुधार–

अशोक ने कुछ ऐसे समारोहों और उत्सवों पर प्रतिबंध लगाया, जिनमें शराब, मांस और नृत्य आदि का प्रयोग होता था, ताकि लोगों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति में बाधा न आए। उन्होंने प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन के अवसर पर कुछ कैदियों को मुक्त करने की प्रथा भी शुरू की।

वर्तमान समय में अशोक के धर्म और नैतिकता की प्रासंगिकता

(क) अशोक के स्तूप और शिलालेख उनके नैतिक मूल्यों को प्रकाशित करते हैं। उन्होंने धर्म के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया, जिनमें नैतिक जीवन, दंड–समता, व्यवहार–समता अहिंसा, सहिष्णुता,लोक कल्याणकारी कार्यसमरसता, और सम्पर्क से संबंधित बुनियादी तत्व शामिल थे, जो आज भी प्रासंगिक बने हुए है। (ख) समाज में न्याय और नैतिकता को बढ़ावा देने के साथ–साथ, अशोक का प्रशासन उत्तरदायित्वपूर्ण भी था। वे अपने राज्य के लोगों के भलाई के लिए कई सामाजिक कार्यक्रमों को संचालित किया और समर्थ शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को प्रवाहित किया।जिस गुड गवर्नेस कि बात आज हो रही है वह अशोक की नीतियों में देखी जा सकती है (ग) सम्पूर्ण रूप से, अशोक का प्रशासन नैतिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, और सहिष्णुता के आधार पर आधारित था, जो उसे एक महान शासक के रूप में याद किया जाता है।उक्त नैतिक मूल्यों का समाज में अधिक बल दिया जाता है ,जिससे प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है (घ) अशोक का प्रशासन भारतीय इतिहास के वो अद्वितीय अध्याय माना जाता है जिसने न केवल भारतीय समाज में बल्कि विश्व के इतिहास में भी अपनी अनूठी पहचान बनाई। अशोक ने नैतिकता और धार्मिकता को अपने प्रशासन के मूल तत्व के रूप में स्थापित किया। उनका धर्मनिरपेक्ष और न्यायप्रिय प्रशासन उन्हें विशेष और महान बनाता है। (च) अशोक का प्रशासन नैतिक मूल्यों पर आधारित था। वे न्याय, समरसता, और सहिष्णुता को अपने राज्य के मूल धार्मिक और राजनीतिक मूल्य मानते थे। उन्होंने समाज में धर्मीय और सामाजिक एकता को प्रोत्साहित किया और न्याय की अनिवार्यता को स्थापित किया। (छ) अशोक का प्रशासन न केवल उनके समय में बल्कि आज भी नैतिकता, समरसता, और सामाजिक न्याय की मिसाल के रूप में याद किया जाता है। उनके धर्मनिरपेक्ष और न्यायप्रिय प्रशासन ने उन्हें एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है और उनकी प्रेरणा हमें आज भी नैतिक और सामाजिक मुद्दों को समझने और समाधान करने के लिए प्रेरित करती है। (ज) अशोक के प्रशासन में न्यायपूर्णता भी महत्वपूर्ण थी। उन्होंने अपने अधिकारियों को न्याय के प्रति सजग रहने की समझाई और न्याय के लिए कठोर कार्रवाई की। उनका प्रशासन समाज केन्द्रित था, जिसमें न्यायपूर्णता का विशेष महत्व था। न्याय की प्रासंगिकता सदैव बनी रहती है

निष्कर्ष

सम्राट अशोक के शासनकाल में नैतिकता और धर्म के प्रति उनकी नीतियाँ उनके धम्म (धर्म) के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रकट होती हैं। अशोक का धम्म एक नैतिक आचार संहिता थी, जो अहिंसा, सत्य, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित थी। उन्होंने अपने शिलालेखों के माध्यम से इन सिद्धांतों का प्रचार किया, जिसमें माता–पिता, गुरु, और वृद्धजनों का सम्मान, दासों और सेवकों के प्रति दया, और सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा का संदेश शामिल था। अशोक का धम्म न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी प्रासंगिक है। धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, और नैतिक आचरण के उनके सिद्धांत वर्तमान समाज में भी महत्वपूर्ण हैं। उनकी नीतियाँ लोक सेवकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं, जो समाज में नैतिकता, करुणा, और सहिष्णुता को बढ़ावा देने में सहायक हैं। अशोक की नीतियाँ और उनके द्वारा स्थापित नैतिक मानदंड भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और आज भी समाज में नैतिकता और सहिष्णुता के प्रचार में प्रेरणास्रोत हैं।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. उपाध्याय,बलदेव : बौद्ध दर्शन मीमांसा, वाराणसी, 1998, पृ0 374–375।
2. मिश्र, जयशंकर प्रसाद : प्राचीन भारत का सामाजि इतिहास,बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी,पटना,2013 पृ0 584–600।
3. पाठक राममूर्ति : भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रुपरेखा, अभिमन्यु प्रकाशन इलाहाबाद,1997पृ0 1–15।
4. अल्तेकर, ए.एस. : स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एंशिएंट इंडिया,मोतिलाल बनारसीदास, 1949,पृ0 130–140।
5. पाण्डेय,विमल चन्द्रःप्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास,सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस इलाहावाद,1985 पृ0 425–466।
6. पाण्डेय आर.एन. : प्राचीन विश्व की सभ्यताएं, प्रयाग पुस्तक भवन प्रयागराज, 2022, पृ0 131–152।
7. पाण्डेय,गोविन्द चन्द्र,स्टडीज इन द ओरिजिन्स आफ द बुद्धिज्म,हिन्दी समिति सूचना विभाग पृ0 11–15।
8. राधाकृष्णन, : इण्डियन फिलॉसफी, जिल्द 1, पृ0 210.–249। ।
9. थापर, रोमिला : अशोक एंड द डिक्लाइन ऑफ मौर्याज ,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,1998,पृ0102–135।
10. झा श्रीमाली, : प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्या0निदेशालय,नई दिल्ली पृ0 04–15। ।
11. बुद्ध प्रकाश : अशोकाज् धम्म, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, पृ0 46–65।
12. राजा राधाकांत देव : भारतीय प्रशासन और मौर्य शासन ,कोलकाता विश्वविद्यालय, 1930 पृ0 115–158।
13. आर.सी. मजूमदार : एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया ,मैकमिलन, 1973, पृ0 215–249
14. Sharma, R. S. (1983). Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient India. Motilal Banarsidass. pp. 201–236.
15. Singh, Upinder. (2008). A History of Ancient and Early Medieval India. Pearson. pp. 320–367.
16. Basham, A. L. (1954). The Wonder That Was India. Rupa Publications. pp. 90–104.
17. Barua, B. M. (1946). Ashoka and His Inscriptions. New Delhi: Government of India Press.